साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2553, फाल्गुन पूर्णिमा, 28 फरवरी, 2010 वर्ष 39 अंक 9

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

कतमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं? यो च पुब्बकारी,
यो च कतञ्ञू कतवेदी – इमे द्वे पुग्गला "दुल्लभा" लोकस्मिं।

– पुग्गलपञ्ञत्तिपालि - ३९

कौन-से दो (प्रकार के) पुरुष संसार में दुर्लभ हैं?
जो पूर्वकारी (परोपकार करने वाले) हैं और जो कृतज्ञ, कृतवेदी यानी उपकार को स्मरण रखने वाले हैं।
– ये दो प्रकार के पुरुष संसार में "दुर्लभ" हैं।

पगोडाः कृतज्ञता का प्रतीक

म्यंमा के दो श्रद्धालु व्यापारी जब भगवान बुद्ध की केशधातु लेकर अपने देश लौटे तब वहां के लोगों ने श्रद्धापूर्वक इस केशधातु को श्वेडगोन पहाड़ी पर सन्निधानित कर एक पगोडा बनाया। उसके साथ-साथ शहर में सूले पगोडा बना और तट पर बोटठाऊं पगोडा बना। उस समय हो सकता है कि किसी सिरफिरे अदूरदर्शी ने इन पगोडाओं का यह कह कर विरोध किया हो कि जहां देश में इतनी गरीबी है वहां इन पगोडाओं पर खर्च क्यों किया जाता है? आगे जाकर श्वेडगोन विशाल भी हुआ और उस पर स्वर्णिम रंग चढ़ा, तब भी संभवतः उसका विरोध हुआ हो। और फिर जब उस पर स्वर्णपत्र लगे, तब तो हो सकता है और भी विरोध किया गया हो। और इतना ही नहीं, सारे देश में सहस्राधिक पगोडाओं का निर्माण हुआ और उनमें से अनेकों पर स्वर्णिम रंग चढ़े और किसी-किसी पर स्वर्णपत्र भी लगाये गये। उन्हें देख कर भी हो सकता है किसी नासमझ व्यक्ति ने विरोध किया होगा।

इसी प्रकार पड़ोसी देश थाईलैंड में एमरोल्ड यानी पन्ने की बुद्धमूर्ति बनाकर, उस पर विशाल पगोडा बना और इसके अतिरिक्त अन्य अनेक पगोडा बने। यों ही कंबोडिया, लाओस और नीचे जावा, सुमात्रा तक बोदोबदूर जैसे विशाल पगोडा बने। इसी प्रकार लंका में भगवान बुद्ध की धातु पर और भिक्षु महेंद्र की धातु पर पगोडा बने। मैं नहीं जानता कि इन सारी जगहों पर इन पगोडाओं का विरोध हुआ हो। परंतु हजार विरोध होने पर भी इन पगोडाओं से जो लाभ हुआ वह अमित है, अतुलनीय है।

पवित्र भूमि भारत

भारत में बोधिवृक्ष के तले संबोधि प्राप्त महामानव बुद्ध के प्रति श्रद्धा के प्रतीक ये सारे स्तूप उसी प्रकार के बने जैसे कि भारत में भगवान की पावन धातु पर बने थे। इनका उद्देश्य यह याद दिलाने के लिए था कि भगवान की यह कल्याणी विद्या हमें भारत से प्राप्त हुई है। आज २२०० वर्ष बीत जाने पर भी जिस देश से उन्हें सद्धर्म मिला उस भारत देश की धरती के प्रति वहां के करोड़ों लोगों के मन में अपार सम्मान और श्रद्धा है।

मैंने स्वयं देखा कि म्यंमा का प्रधानमंत्री ऊ नू हमारे बरमी प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करते हुए जब कलकत्ता (कोलकाता) पहुँचा तब हवाई जहाज से उतरते हुए अंतिम सीढ़ी पर बैठ गया और धरती को हाथ से छू कर अपने माथे पर लगाया। उसने हमें बताया कि भारत की इस पावन धरती को नमस्कार किये बिना मैं इस पर पांव कैसे रखूं? इतना ही नहीं, हजारों, लाखों श्रद्धालु लोग अपने देशों से भारत आते हैं और यहां की तपोभूमियों की माटी सिर पर लगाते हैं, अपने बच्चों के सिर पर लगाते हैं।

सम्राट अशोक

भगवान की मूल वाणी और कल्याणी विपश्यना विद्या सम्राट अशोक ने ब्रह्मदेश की स्वर्णभूमि भेजी, जहां ये आज तक शुद्ध रूप में कायम रखी गयीं। जिस व्यक्ति से उन्हें धर्म मिला, उस सम्राट अशोक के प्रति भी उनके मन में असीम श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव है। इसी कारण वहां के गृहस्थ और भिक्षु प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में यह पद भी गाते हैं–

यथा रक्खिसु पोराणा, सुराजानो तथेविमं।
राजा रक्खतु धम्मेन, अत्तनोव पजं पजं॥

जैसे पुराने राजाओं ने, इसमें उनका संकेत सम्राट अशोक की ओर ही होता है, अपनी प्रजा का संरक्षण और पालन उसी प्रकार किया, जैसे पिता अपनी संतान की करता है। वैसे ही आज का हमारा राजा भी अपनी प्रजा का संरक्षण और पालन अपनी संतान की भांति करे। स्पष्ट है कि सम्राट अशोक उनके लिए आदर्श राजा था। जैसे अपने यहां राम-राज्य की महिमा गायी जाती है, वैसे ही उन देशों में अशोक-राज्य की महिमा गायी जाती है, जो सही भी है।

अशोक ने अपने शिलालेखों में स्पष्ट किया है कि वह कितना प्रजावत्सल था।

देवानंपियो प्रियदसि राजा यसो व कीति व न महाथावहा मञते अञत तदात्पनो दिघाय च मे जनो धंमसुस्रुंसा सुस्रुसता धंमवुतं च अनुविधियतां

– गिरनार शिला दशम अभिलेख

– देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा; यश अथवा कीर्ति को बड़े महत्त्व की वस्तु नहीं मानते। बजाय इसके उनकी प्रजा अभी और दीर्घ काल तक, धर्म की बात सुनने को लालायित रहे और धर्म का आचरण करे, यही उनका मंतव्य है।

सम्राट अशोक अपने अधिकारियों को इन शब्दों में आदेश देता है–

स हेवं कटू कंमे चलितविये अस्वासनिया च ते एन ते पापुनेयु अथा पित हेवं ने लाजा ति अथ अतानं अनुकंपति हेवं अफेनि अनुकंपति अथा पजा हेवं मये लाजिने. *– जौगड शिला द्वितीय पृथक अभिलेख*

– धर्म का आचरण करते हुए आपको (मंत्रियों को) अपना कर्त्तव्य-पालन करना चाहिए और प्रजा को आश्वासन देना चाहिए ताकि वह समझती रहे कि राजा हमारे लिए एक पिता समान है। जैसे पिता अपनी संतान पर कृपा करते हैं वैसे ही राजा हमारे ऊपर कृपा करते हैं।

संप्रदायवाद की निंदा करते हुए सम्राट अशोक ने कहा –

यो हि कोचि आत्पपासंडं पूजयति परपासंडं व गरहति सवं आत्पपासंडभतिया किंति आत्पपासंडं दीपयेम इति सो च पुन तथ करातो आत्पपासंडं बाढतरं उपहनाति *– गिरनार शिला द्वादश अभिलेख*

– अपने संप्रदाय के प्रति आसक्ति होने के कारण जब कोई इस भाव से कि मैं अपने संप्रदाय को कैसे प्रकाशित करूं; अपने संप्रदाय की प्रशंसा और अन्य संप्रदायों की निंदा करने लगता है, तब वह ऐसा करता हुआ वास्तव में अपने संप्रदाय की खूब बढ़-चढ़ कर हानि ही करता है।

इस मंतव्य के कारण ही अशोक के राज्य में कहीं कोई सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ। प्रजा में सुख-शांति बनी रही। इन सच्चाइयों को स्मरण करते हुए पड़ोसी देश के लोगों के मन में भारत के प्रति और भारत से भगवान बुद्ध का सद्धर्म भेजने वाले सम्राट अशोक के प्रति अत्यंत कृतज्ञता और सम्मान का भाव है। वहां के निवासियों की रग-रग में सम्राट अशोक के प्रति कैसा अपार स्नेह और सम्मान भरा हुआ है, इसका एक उदाहरण –

म्यंमा एक नारीप्रधान देश है। यहां किसी के घर में जब कोई पुत्री जन्म लेती है तब वैसी ही खुशियां मनायी जाती हैं जैसी कि भारत में किसी के यहां पुत्र के जन्म लेने पर। क्योंकि वहां विवाह होने पर पुत्री अपनी ससुराल नहीं जाती बल्कि दामाद घर में आता है। फिर भी हर मां की यह इच्छा अवश्य होती है कि वह कम से कम एक पुत्र को तो अवश्य जन्म दे, जिसे राजकुमार की भांति सजाकर, गाजे-बाजे के साथ संघ को अर्पित करके अपने आपको धन्य मान सके, जैसे कि सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र को अर्पित किया था। और जब कभी कोई माता-पिता अपने पुत्र को संघ को अर्पित करते हैं तब उसे राजकुमार महेंद्र की भांति राजसी पहनावा पहना कर, घोड़े पर चढ़ा कर, धूमधाम से जुलूस निकाल कर, संघाराम में ले जाते हैं और वहां वह श्रामणेर बनता है। इस धूमधाम में गरीब से गरीब माता-पिता का गांव-नगर के लोग साथ देते हैं। अधिकतर बच्चे थोड़े समय के लिए ही श्रामणेर बनते हैं परंतु कुछ आजीवन भिक्षु बने रहते हैं। इस प्रकार लगभग २२०० वर्ष पूर्व की उस घटना को वे आज भी श्रद्धापूर्वक जीवित रखे हुए हैं।

उन देशों में बने अनेक पगोडा, वहां के निवासियों को भारत की, भगवान बुद्ध की, उनकी कल्याणी शिक्षा की, तथा उसे उनके यहां भेजने वाले सम्राट अशोक की, याद दिलाते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धा जगाते हैं। ठीक इसी प्रकार यह 'ग्लोबल विपस्सना पगोडा' सयाजी ऊ बा खिन की महानता का तथा उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

सद्धर्म की पुनर्स्थापना

भारत ने भगवान बुद्ध की मूल वाणी, उसकी अर्थकथाएं, टीकाएं, अनुटीकाएं सब गँवा दी और विपश्यना साधना को तो नेस्तनाबूद ही कर दिया। यहां तक कि साधना तो दूर, भारत की भाषाओं से 'विपश्यना' शब्द ही लुप्त कर दिया गया। बुद्ध की सही शिक्षा के लाभ से यहां के लोग वंचित हो गये। ऐसी अवस्था में म्यंमा के एक महान संत सयाजी ऊ बा खिन के मन में यह धर्मसंवेग जागा कि जो अनमोल रत्न हमें भारत से प्राप्त हुआ, उसका हम पर बड़ा ऋण है। आज भारत उन्हें खो बैठा है। यह पुरातन ऋण हमें चुकाना है। इसीलिए उन्होंने अपने धर्मपुत्र के माध्यम से इन दोनों रत्नों को भारत लौटाया। परिणाम यह हुआ कि लगभग २००० वर्ष के अंतराल के बाद भारत के मुंबई शहर में विपश्यना का पहला शिविर लगा। बुद्ध की मूल वाणी और उस संबंधी सारा पालि साहित्य यहां नागरी लिपि में प्रकाशित किया गया। फिर इसे अनेक लिपियों में सीडी-रोम में और इंटरनेट में भी समाहित किया गया। यह सब कुछ आज सर्वसामान्यजन के लिए निःशुल्क उपलब्ध है।

भारत ने जिस बुद्ध वाणी और विपश्यना विद्या को पूर्णतया खो दिया था उसे म्यंमा ने संभाल कर रखा, इस कारण भारत तथा विश्व के लोग म्यंमा का उपकार मानते हैं और सदियों तक मानते रहेंगे। यहां मुंबई के गोराई में बना विशाल ग्लोबल विपश्यना पगोडा तथा अन्य बीसों पगोडा यहां के लोगों के मन में सदैव म्यंमा की, और भगवान बुद्ध की खोयी हुई विपश्यना विद्या को वापस लौटाने वाले महान संत सयाजी ऊ बा खिन की, याद दिलाते रहेंगे। उनके प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता जगाते रहेंगे।

वह दिन दूर नहीं जबकि भारत के और विश्व के अनेक विपश्यी म्यंमा की तीर्थयात्रा करेंगे और श्वेडगोन पर, सयाजी ऊ बा खिन के केंद्र पर, सयातैजी के केंद्र पर, लैडी सयाडोजी के केंद्र पर, श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए ध्यान करेंगे। कृतज्ञता की यही परिणति होती है।

सदियों तक लोग मुंबई के इस विशाल पगोडा में तथा विश्व के अन्य पगोडाओं में नमन करते हुए वहां ध्यान करेंगे और कृतज्ञ होंगे। वहां सब जाति, गोत्र, वर्ण, वर्ग, संप्रदाय और देशों के लोग साथ बैठ कर ध्यान करेंगे तब विश्वबंधुत्व का आदर्श कायम होगा और फूले-फलेगा।

कृतज्ञता धर्म का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यदि कोई इन सच्चाइयों को न समझ कर आलोचना करता है तो वह दया का पात्र है। हमें चाहिए कि उसके प्रति मैत्रीभाव रखें! सच्चाई उसकी समझ में आये! उसका मंगल हो! विपश्यना विद्या द्वारा सारे विश्व का मंगल हो!

मंगल मित्र,

स. ना. गो.

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

['महामानव बुद्ध की महान विद्या **विपश्यना** *का उद्गम और विकास' की जानकारी देने वाले सभी चित्रों को चित्र-प्रदर्शनी (आर्ट गैलरी) में लगा दिया गया है। इनके द्वारा भगवान बुद्ध के जीवनकाल की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी मिलेगी। चित्रावली के सभी* **१२२ चित्रों** *को आर्टगैलरी में यथास्थान सजाया गया है। (बुद्धकालीन ऐतिहासिक घटनाओं की ये चित्रकथाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि बुद्ध ने लोगों को सही माने में प्रज्ञा में स्थित होना सिखाया। स्थितप्रज्ञ* **'ठितपञ्ञो'** *होने की ही शिक्षा दी। उन्होंने किसी एक व्यक्ति को भी* **'बौद्ध'** *नहीं बनाया, बल्कि धार्मिक बनाया। पूरे तिपिटक में 'बौद्ध' शब्द ढूंढने से भी नहीं मिलता। जो मिलते हैं वे –* **'धम्मी, धम्मिको, धम्मट्ठो, धम्मचारी, धम्मविहारी'** *.. आदि ही मिलते हैं। उन्होंने शील, समाधि और प्रज्ञा द्वारा विपश्यना का अभ्यास*

करना सिखाया। वे स्वयं प्रज्ञा में स्थित हुए और उनके बताये मार्ग पर चलने वाले लोग किस प्रकार प्रज्ञा में स्थित हुए – ये बातें इन चित्रों और चित्रकथाओं में स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी हैं।)

*इन चित्रों की वृहत् पुस्तक '**बुद्धजीवन-चित्रावली**' **सजिल्द** छप गयी है जो कि अत्यधिक आकर्षक, टिकाऊ और सुंदर है। **वी.सी.डी./डी.वी.डी.** भी बन गयी है।*

इस चित्रावली की अनेक चित्र-कथाओं को हम पहले से ही प्रकाशित करते आ रहे हैं। अब जो कथाएं शेष हैं, उन्हें ही आगे बढ़ायेंगे। सं.]

मगध में पुनरागमन

बोधिसत्त्व की अवस्था में भगवान ने मगधनरेश बिंबिसार को वचन दिया था कि जब सम्यक संबोधि प्राप्त होगी तब राजगीर अवश्य आयेंगे। अतः अब वे १,००३ शिष्यों के साथ राजगीर आये। सूचना मिलते ही राजा बिंबिसार बहुसंख्यक नागरिकों के साथ उनकी अगवानी के लिए पहुँचा।

मगध की राज-नगरी में उरुवेल काश्यप के अनेक श्रद्धालु भक्त थे। उनके मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि क्या श्रमण गौतम उरुवेल काश्यप का शिष्य होकर आया है अथवा उरुवेल काश्यप मुंडित होकर श्रमण गौतम का शिष्य बन गया है?

इस पर भगवान द्वारा पूछे जाने पर उरुवेल काश्यप ने भगवान को नमन करते हुए कहा कि मैं ही इनका शिष्य हूं। पहले मैं गृहस्थ जीवन के कामभोग को त्याग कर संन्यासी बना, परंतु मन से काम-वासना नहीं निकली। मैंने इस हेतु कामेष्टि यज्ञ किये, जिससे कि मरणोपरांत स्वर्ग में जन्म हो और मेरी कामभोग की प्रबल इच्छा पूर्ण हो। परंतु जब भगवान के संपर्क में आया तब इनकी शिक्षा से कामराग ही नहीं, सभी राग-द्वेष, मोह और अहंकार की अविद्या दूर हुई। अतः भगवान बुद्ध ही मेरे परम कृपालु शास्ता हैं और मैं इनका महाकृतज्ञ शिष्य हूं। इन्हीं की कृपा से शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थित होकर मैं सही माने में स्थितप्रज्ञ हुआ, अरहंत हुआ। अब कामेष्टि यज्ञ कहां? काम-संबंधी सभी कामनाएं विलीन हो गयीं। **विहाय कामान्यः सर्वान्**[१] – कामभोग के प्रति कोई स्पृहा नहीं रही। **निःस्पृहः** हो गया। **निर्ममो निरहङ्कारः** हो गया। अब न अपने आप के प्रति अहंकार रहा और न अपने भक्तों के प्रति ममकार। 'मैं'-'मेरे' से उत्पन्न सभी अशांति दूर हो गयी। **शान्तिमधिगच्छति** की अवस्था प्राप्त हो गयी। तभी वस्तुतः स्थितप्रज्ञ और अरहंत होने की सच्चाई का अनुभव कर सका।

प्रजा-सहित राजा बिंबिसार भी समझ गया कि उसके राज्य में प्रसिद्ध और पूज्य उरुवेल काश्यप वस्तुतः भगवान की शिक्षा से ही अरहंत हुआ है।

राजा ने भिक्षुसंघ-सहित भगवान को भोजन के लिए आमंत्रित किया। भोजनोपरांत भगवान ने राजा और राजपरिवार-सहित उपस्थित दरबारियों को धर्म का उपदेश दिया। राजा बिंबिसार चाहता था कि संघ-सहित भगवान राजगीर में चिरकाल तक विहार करें। अतः उसने अत्यंत विनम्रतापूर्वक वेणुवन का मनोरम राज-उद्यान भगवान को विहार के लिए अर्पित कर दिया। वेणुवन बुद्धप्रमुख भिक्षुसंघ का पहला विहार हुआ।

भगवान ने दूसरा वर्षावास वहीं बिताया।

---

१. विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति॥

– (भगवद्गीता २.७१)

रागं विनयेथ मानुसेसु, दिब्बेसु कामेसु चापि भिक्खु।
अतिक्कम्म भवं समेच्च धम्मं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥

(सुत्तनिपात ३६३, सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त)

जो भिक्षु मनुष्य-लोक के काम-भोगों के प्रति तथा स्वर्ग-लोक में काम-भोगों के प्रति राग त्याग देता है और धर्म को अच्छी प्रकार जान कर, भवसंसरण से मुक्त हो जाता है, वही संसार में सही प्रकार प्रव्रजित आचरण कर सकेगा।

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन और साधकों के बीच संपर्क-सूत्र

फाउंडेशन की ओर से साधकों को त्वरित सूचना देने के लिए **एस.एम.एस.** के द्वारा संपर्क-सूत्र बनाया जा रहा है ताकि **विपश्यना** संबंधी कोई भी जानकारी साधकों तक यथाशीघ्र पहुँचाई जा सके। इसके लिए (केवल) **साधक** अपने मोबाइल से निम्न प्रकार एस.एम.एस. भेज कर अपने आपको रजिस्टर करायें। **GVF SMS Message Center** पर रजिस्टर हो जाने पर आपका पूरा नाम, फोन नं., स्थान का नाम और ईमेल-पता, शि.सं. हमारे यहां अंकित हो जायगी। इसके लिए आपके मोबाइल फोन से **575758** को यह संदेश भेजें – **'vipassana' 'आपका नाम' 'आपका उपनाम' 'शहर' 'ईमेल'** (यदि हो) **'शिविर संख्या'** (अर्थात कुल शिविर किये = १४) **उदाहरणार्थ – Vipassana Gautam Parekh Mumbai gparekh99@xyz.com 14** तदर्थ साधक को मात्र ३/- रुपये खर्च करने होंगे।

भविष्य में यदि यह सुविधा नहीं चाहिए तो आपको केवल 'stop vipassana' यह संदेश 575758 पर भेजना होगा। इसके लिए फिर आपको रु. ३/- का शुल्क लागू होगा। सूचना मिलने का कोई शुल्क नहीं देना होता।

ध्यान देने की बात यह है कि फिलहाल कोई साधक इस माध्यम द्वारा हमसे सीधे संपर्क नहीं कर पायेगा बल्कि मात्र हमारी ओर से बड़ी मात्रा में (मास स्केल पर) सूचना भेजी जा सकेगी, जैसे कि **एक दिवसीय शिविर** की सूचना, कोई कार्यक्रम अचानक रद्द हुआ या यथाशीघ्र कोई नया कार्यक्रम बना। आदि...

आपका नाम रजिस्टर हो जाने पर आपके मोबाइल पर निम्न प्रकार से सूचना आ जायगी – **"Thank you for registering with Global Vipassana Foundation (GVF) SMS Message Center. May All Be Happy."**

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थानों पर आयोजित इन कार्यशालाओं का लाभ ले सकते हैं। **पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं : (१)** (केवल हिंदी में) २७-५ से ४-६-२०१०, **स्थान –** श्री रावतपुरा सरकार इंस्टीट्यूट, कलापुरम, एन.एच. ७५, झांसी रोड, दतिया-पिन-४७५६६१. **संपर्क –** श्री नरेशकुमार अग्रवाल, शांतिनिकेतन हॉस्टेल, भारत पेट्रोलियम के पास, शिवाजी नगर, कानपुर रोड, झांसी-(उ.प्र.) मो. ०९९३५५-९९४५३, ०९००५७-७४५०४. ईमेल – shanti.globaldhamma@gmail.com

(२) (अंग्रेजी में, केवल विदेशियों के लिए) १९-११ से ३०-११-२०१०, **स्थान –** धनवंतरि स्कूल, प्रमुख स्वामी चार रस्ता, मुंद्रा रिलोकेशन साइट, भुज-३७०००१. **संपर्क –** डॉ. (सुश्री) शांतुबेन पटेल, मो. ०९८२५६६२१५६, नि. ०२८३२-२९१३६६. ईमेल – shantubenpatel@gmail.com

कार्यशाला : "सम्राट अशोक के अभिलेख" विषय पर
दि. ८ से १६ अगस्त,२०१० सुबह ११ बजे तक

स्थानः कोठारी फार्म हाऊस, जयपुर-अजमेर राजमार्ग से २ कि.मी. अंदर, भानक्रोटा-जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर. **संपर्कः** श्री अनिल मेहता, मो. ०९६१०४०१४०१, ईमल– paliworkshop@yahoo.co.in

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

विपश्यना विशोधन विन्यास के दान-दाताओं को १२५ प्रतिशत की आयकर की छूट

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की ओर से आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ३५(१)(३) के अंतर्गत दानदाता को दान की रकम पर १२५ प्रतिशत की छूट मिलती है जो कि विपश्यना विशोधन विन्यास को अब स्थायी रूप से प्राप्त हो गयी है। पहले यह छूट निश्चित समयावधि तक के लिए ही प्राप्त हुआ करती थी। यथा अधिनियम सं. ७१/२००९ दि. २५.०९.२००९ (फा.सं. २०३-१३-२००८ आ.क.वि.-२) के अंतर्गत कर निर्धारण वर्ष २००६-२००७ से आगे अगली सूचना मिलने तक यह छूट प्राप्त है।

इस प्रकार विपश्यना विशोधन विन्यास के सभी दानदाता वित्तीय वर्ष १९९१-९२ से अब तक और आगे भी, अपनी दी गई दान-राशि पर तदर्थ आवेदन कर सकते हैं।

(बिन्दास) यू टीवी एक्सन पर पूज्य गुरुदेव के प्रवचन

बिन्दास टीवी पर प्रतिदिन ४-३० से ५-४५ बजे तक नित्य पूज्य गुरुदेव के सायंकालीन प्रवचन होते हैं। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं।

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. Dr. (Ms.) Wilaiwan Sitasuwan, *Thailand*
   To assist area teachers in serving Dhamma Kamala

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mrs. Pornphen Leenutapong. *Thailand*
2. Mrs. Patra Patrabutra, *Thailand*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. Ms. Kimiko Ouchi, *Japan*
2. Mr. Ole Bosch, *South Africa*
3. & 4. Mr. Eric Balans & Mrs. Alexandra (Xana) Gil, *Portugal*
5. Ms. Katayoun Eslah, *Canada*
6. & 7. Mr. Ireneusz (Eric) & Mrs. Ania Sroka, *Canada*
8. Mr. Zachary Holder & Mrs. Dana Kimbell, *USA*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री अनंत वामन खाडिलकर, रायगड
२. श्री जी. भास्कर खमम, आंध्रप्रदेश
३. श्री मुरली नेलकांति रंगारेड्डी, आं.प्र.
४. श्री पलोजू एस. रंगारेड्डी, आंध्रप्रदेश
५. श्रीमती एन. लावण्यकुमारी, गुंटूर, आंध्रप्रदेश
६. श्री मंगूकिया वल्लभभाई, अहमदाबाद
७. श्री राजेश गांधी, अहमदाबाद
८. श्री आशीष प्रधान, पुणे

दोहे धर्म के

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥

गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥

यदि गुरुवर मिलते नहीं, बरमा देश सुदेश।
तो धन के जंजाल में, जीवन खोता शेष॥

पथ भूला दिग्भ्रम हुआ, भटक रहा अकुलाय।
धन्य! धन्य! गुरुदेव ने, सतपथ दिया दिखाय॥

बाहर बाहर भटकते, जीवन रहा गँवाय।
धन्य भाग! गुरुवर मिले, सतपथ दिया दिखाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

बाबा! बिरमा ही मिल्यो, गुरुवर संत सुजान।
सुद्ध धरम ऐसो दियो, हुयो परम कल्यान॥

जळम मिल्यों जीं देस मँह, धरम मिल्यो जीं देस।
बाबा! कदे न भूलस्यूं, मंगल बिरमा देस॥

बाबा! भलो मनावस्यूं, जद तक तन मँह प्राण।
जळमभोम रो रिण चुकै, किरतगता रै पाण॥

जै गुरुवर मिलतो नहीं, धरम गंग रै तीर।
बाबा! गंगा पूजतो, पी पातो ना नीर॥

बाबा! बिरमा देस का, सुखी र वै सै लोग।
दूर र वै दुरभिक्ख दुख, दूर र वै सै रोग॥

धरम रतन भेळो कर्यो, मां बिरमा री गोद।
इब भारत नै बांटतां, मन मावै नहिं मोद॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2553, **फाल्गुन पूर्णिमा**, **२८ फरवरी, 2010**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-**, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-**, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org